दिवाकर चित्रकथा

भगवान ऋषभदेव

अंक २ मूल्य 20.00

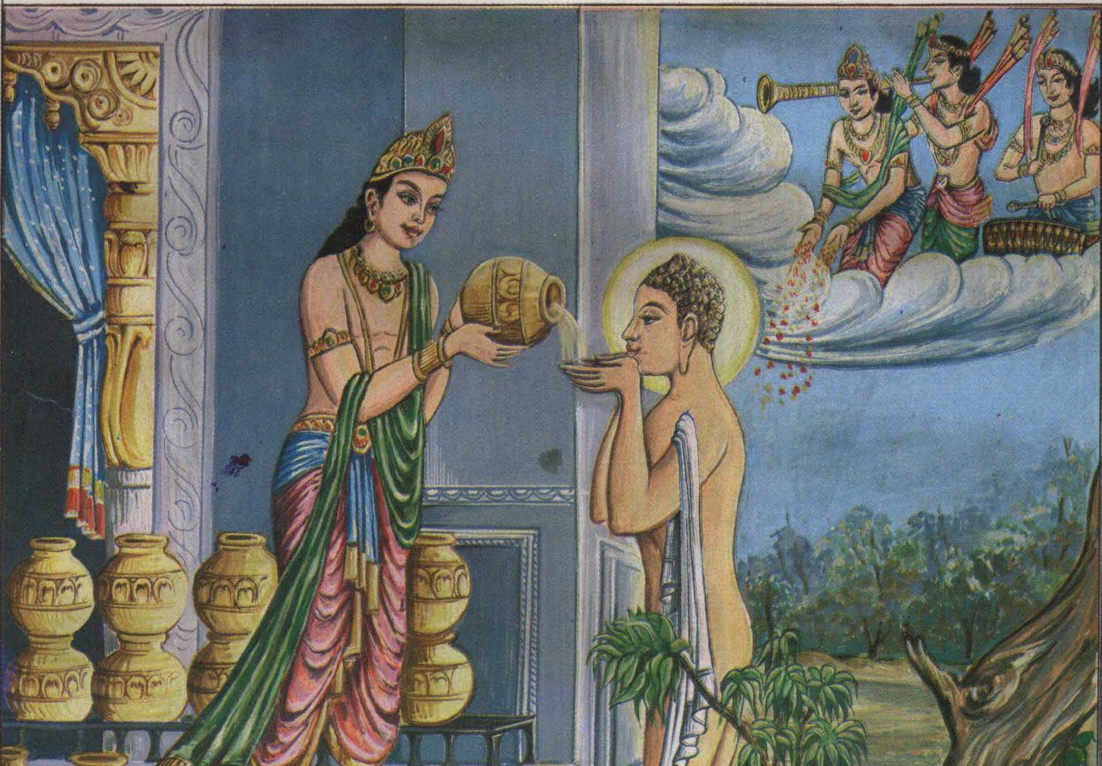

सुसंस्कार निर्माण विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान ऋषभदेव

भारत के तीन प्रमुख धर्म हैं—जैन, बौद्ध एवं वैदिक (हिन्दूधर्म)। इन सभी की मान्यता है कि संसार में धर्म का आदि स्रोत करोड़ों अरबों वर्ष पुराना है। जैनधर्म के अनुसार वर्तमान काल प्रवाह में इस पृथ्वी पर भगवान ऋषभदेव ने सर्वप्रथम धर्म का प्रसार किया। न केवल धर्म का, किन्तु मनुष्य को कृषि, व्यवसाय, कला, शिल्प, राजनीति व राज-व्यवस्था की शिक्षा सर्वप्रथम ऋषभदेव ने दी थी। वे संसार के प्रथम राजा भी थे और प्रथम श्रमण (संन्यासी) एवं धर्म प्रवर्त्तक तीर्थंकर भी हुए। इसलिए उन्हें आदिनाथ अथवा प्रथम तीर्थंकर नाम से जाना जाता है।

ऋषभदेव के सबसे बड़े पुत्र भरत प्रथम चक्रवर्ती सम्राट् हुए। जिनके नाम से हमारे देश का नाम भारतवर्ष प्रसिद्ध हुआ।

भगवान ऋषभदेव लोकनायक भी थे और धर्मनायक भी। उन्होंने मानव-समाज की उन्नति के लिए मनुष्य को पुरुषार्थ की ओर प्रवृत्त किया तथा फिर आत्म-शान्ति के लिए निवृत्ति का मार्ग भी दिखाया। संसार में सुचारु समाज-व्यवस्था तथा राज-व्यवस्था स्थापित करके उन्होंने अन्त में संयम एवं त्याग मार्ग स्वीकार कर भोग और त्याग का संतुलित जीवन दर्शन सिखाया।

भगवान ऋषभदेव का जीवन-चरित्र जैन शास्त्रों के अतिरिक्त ऋग्वेद एवं श्रीमद् भागवत पुराण आदि में भी आता है। इतिहासकारों ने भगवान ऋषभदेव तथा भगवान शिवशंकर में अनेक विचित्र समानताएँ देखकर अनुमान लगाया है कि कहीं एक ही महापुरुष के ये दो स्वरूप तो नहीं हैं? चूँकि दोनों ही महापुरुषों का जीवन-लक्ष्य तो लोक-कल्याण रहा है।

हमने भगवान ऋषभदेव का यह पवित्र चरित्र जैनधर्म के प्राचीन ग्रंथ आदि पुराण तथा त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र के आधार पर प्रस्तुत किया है।

लेखक : शासन सूर्य मुनि श्री रामकृष्ण जी महाराज के शिष्यरत्न जैन रत्न श्री सुभद्र मुनि जी

संपादक : ● श्रीचन्द सुराना 'सरस' ● चन्दनमल 'चाँद'

संयोजन एवं प्रकाशन-व्यवस्था : संजय सुराना

चित्रण : डॉ. त्रिलोक शर्मा

प्रकाशक :

दिवाकर प्रकाशन	मुनि मायाराम सम्बोधि प्रकाशन
ए-7, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड, आगरा-282 002	के. डी. ब्लॉक, पीतमपुरा, दिल्ली-110 034

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संजय सुराना द्वारा दिवाकर प्रकाशन, ए-7, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड, आगरा-282 002 दूरभाष : 351165, 51789 के लिए क्विक लेजर ऑफसैट, आगरा में मुद्रित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान ऋषभदेव

इस अवसर्पिणी काल के आदि युग की यह कहानी है। जब मनुष्य की इच्छाएँ कम थीं। सत्य, सदाचारमय, सन्तोषी प्रवृत्ति के कारण सभी मनुष्य सुखी थे, न कोई राजा न कोई प्रजा ! सब समान थे। कल्पवृक्षों* से मनचाही वस्तुएं मिल जाती थीं। इसलिए न कहीं संघर्ष था, न कहीं अशान्ति।

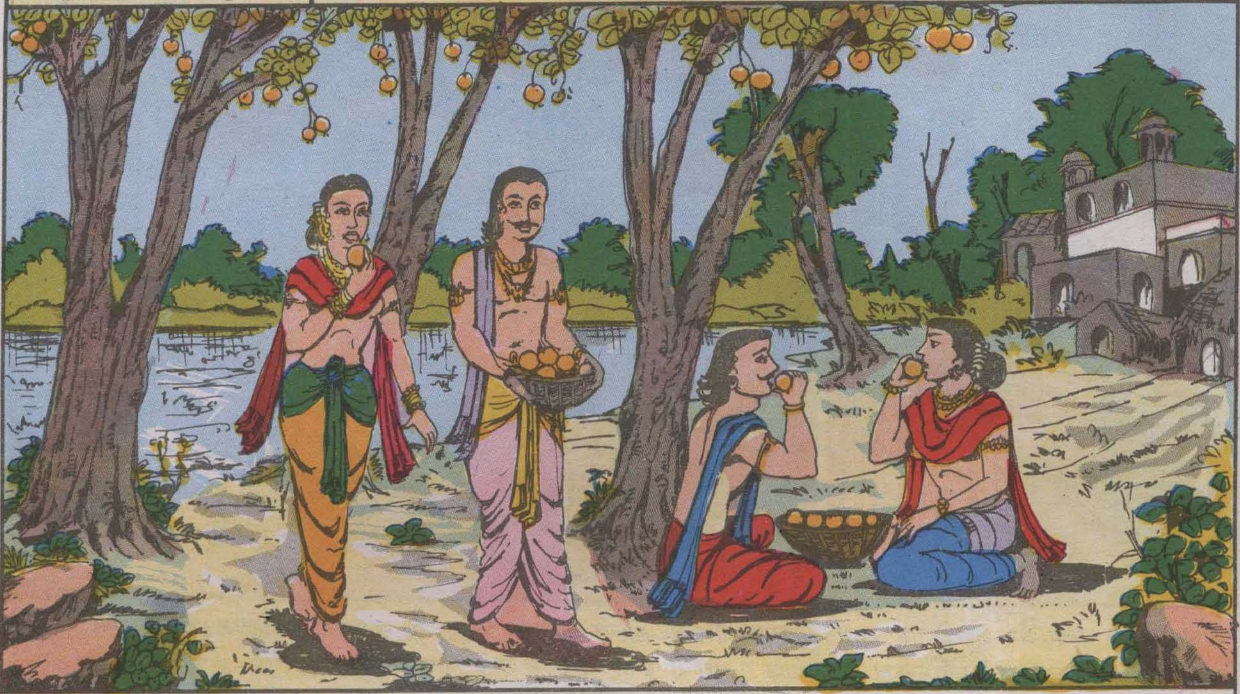

धीरे-धीरे जनसंख्या बढ़ने लगी। कल्पवृक्षों से फल कम मिलने लगे। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ गई। फलस्वरूप छीना झपटी बढ़ी तो संघर्ष की चिनगारियाँ उठने लगीं।

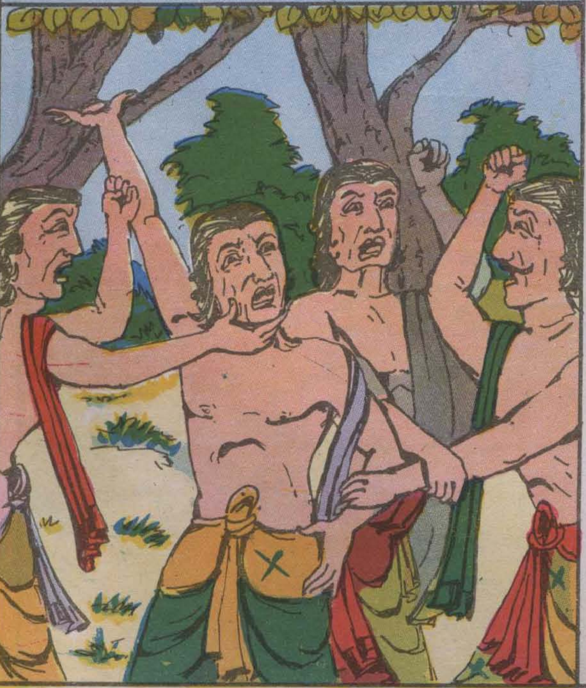

तब मनुष्यों ने आपसी संघर्ष को मिटाकर सबको अनुशासित रखने के लिए अपने में सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति, नाभि राय को अपने कुल का मुखिया (कुलकर) नेता चुन लिया।

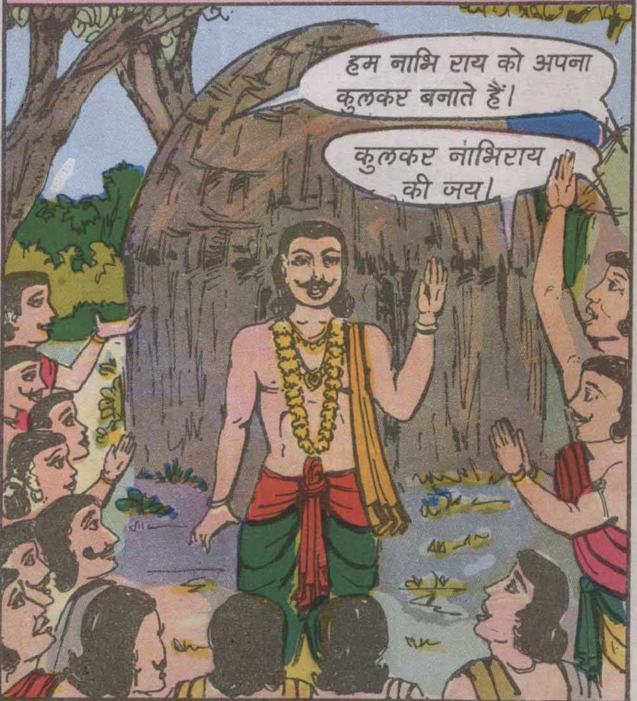

* कल्पवृक्ष : देवीय शक्ति युक्त वृक्ष जो सभी इच्छाएँ पूर्ण करता था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

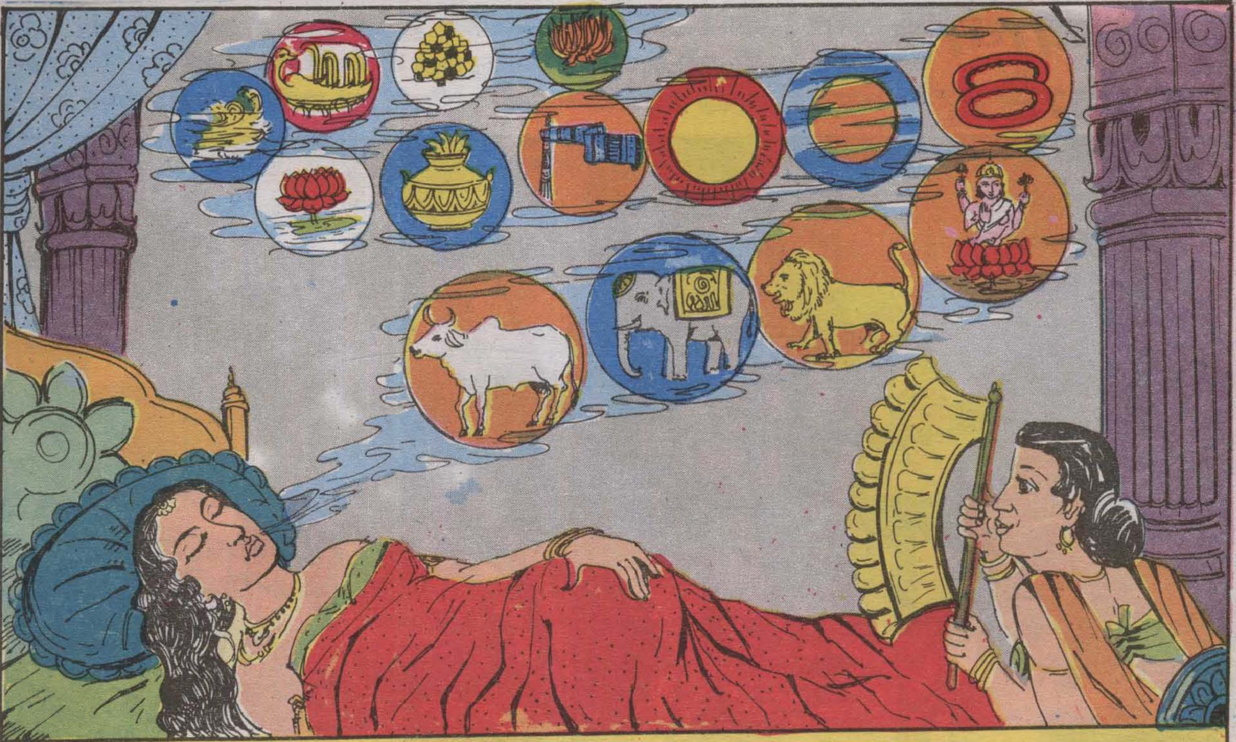

नाभिराय की रानी थी–मरूदेवी। आषाढ़ कृष्णा चौथ की शान्त रात्रि में महारानी मरूदेवी ने शयनकक्ष में सोते समय १४ विलक्षण और महत्वपूर्ण स्वप्न देखे।शुभ स्वप्न देखकर वे जाग उठीं और नाभिराय के पास आकर बोलीं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

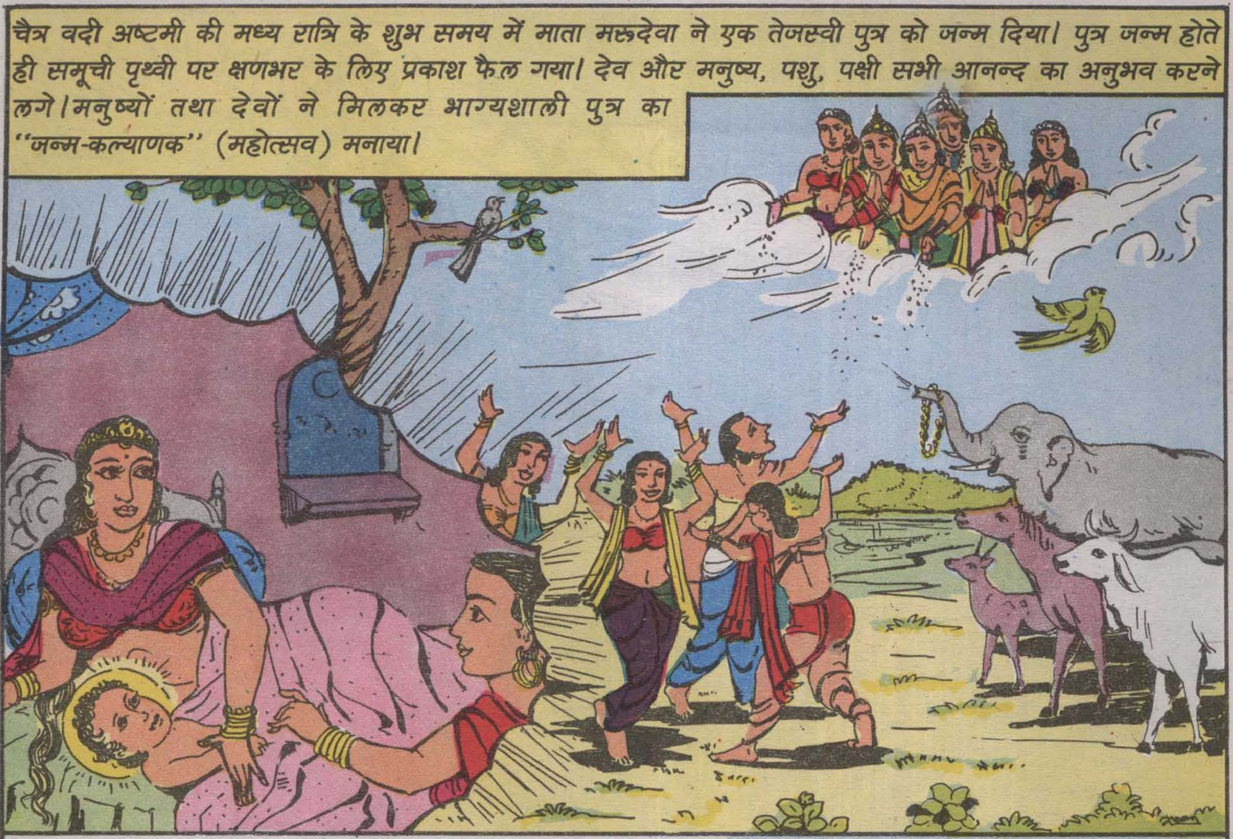

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुलकर नाभि के समय तक मानव समाज मर्यादा पालक और शान्तिप्रिय था। धीरे-धीरे मनुष्य धीठ स्वभाव का होने लगा, अपराध की मनोवृत्ति बढ़ी। अव्यवस्था फैलने लगी। तब जनता घबराकर कुमार ऋषभदेव के पास शिकायत करने आई।

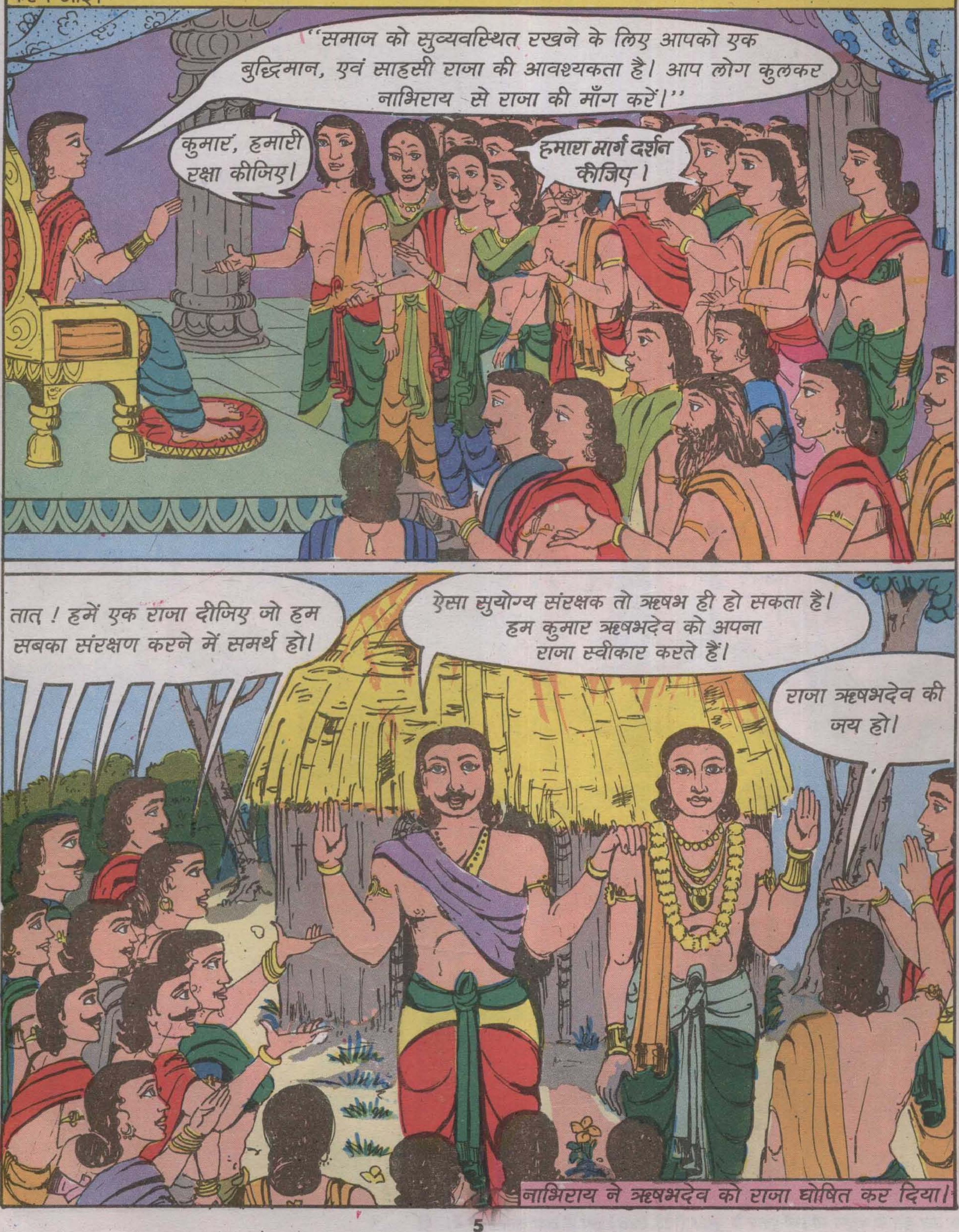

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऋषभदेव का राज्याभिषेक समारोह मनाया गया। जिसमें नाभिराय एवं माता मरुदेवा ने ऋषभदेव को आशीर्वाद दिया। सभी प्रमुख युगलिक* समूह, भरत बाहुबली आदि पुत्र तथा ब्राह्मी, सुन्दरी, (पुत्रियां) उपस्थित थीं। युगलियों ने कमल पत्रों में पवित्र जल भरकर ऋषभदेव का चरण अभिषेक किया। ऋषभदेव जहाँ निवास करते थे, उस नगरी का नाम "विनीता, रखा गया।

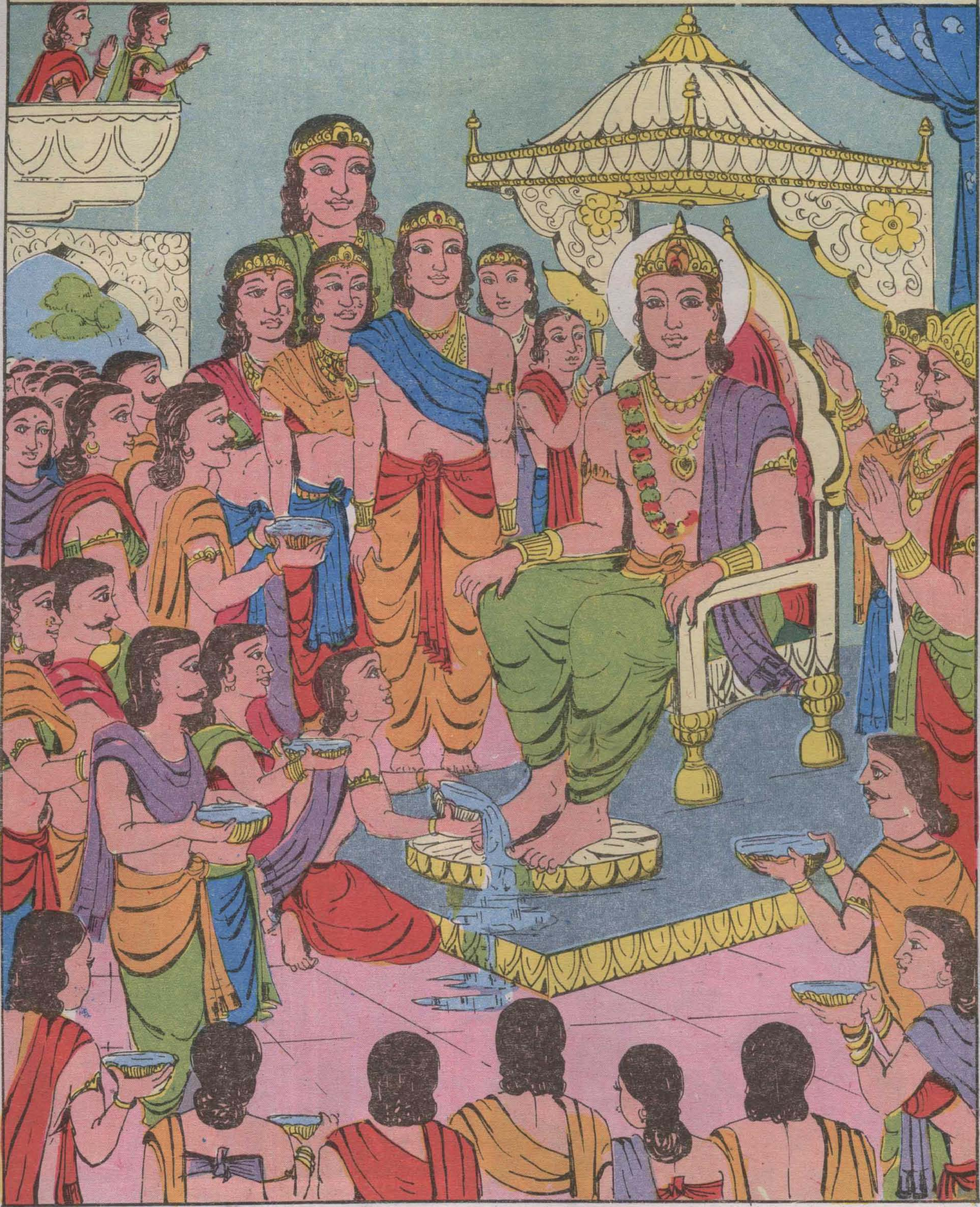

* उस युग के मनुष्य जो स्त्री-पुरुष के युगल (जोड़े, Pair) रूप में सदा साथ रहते थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

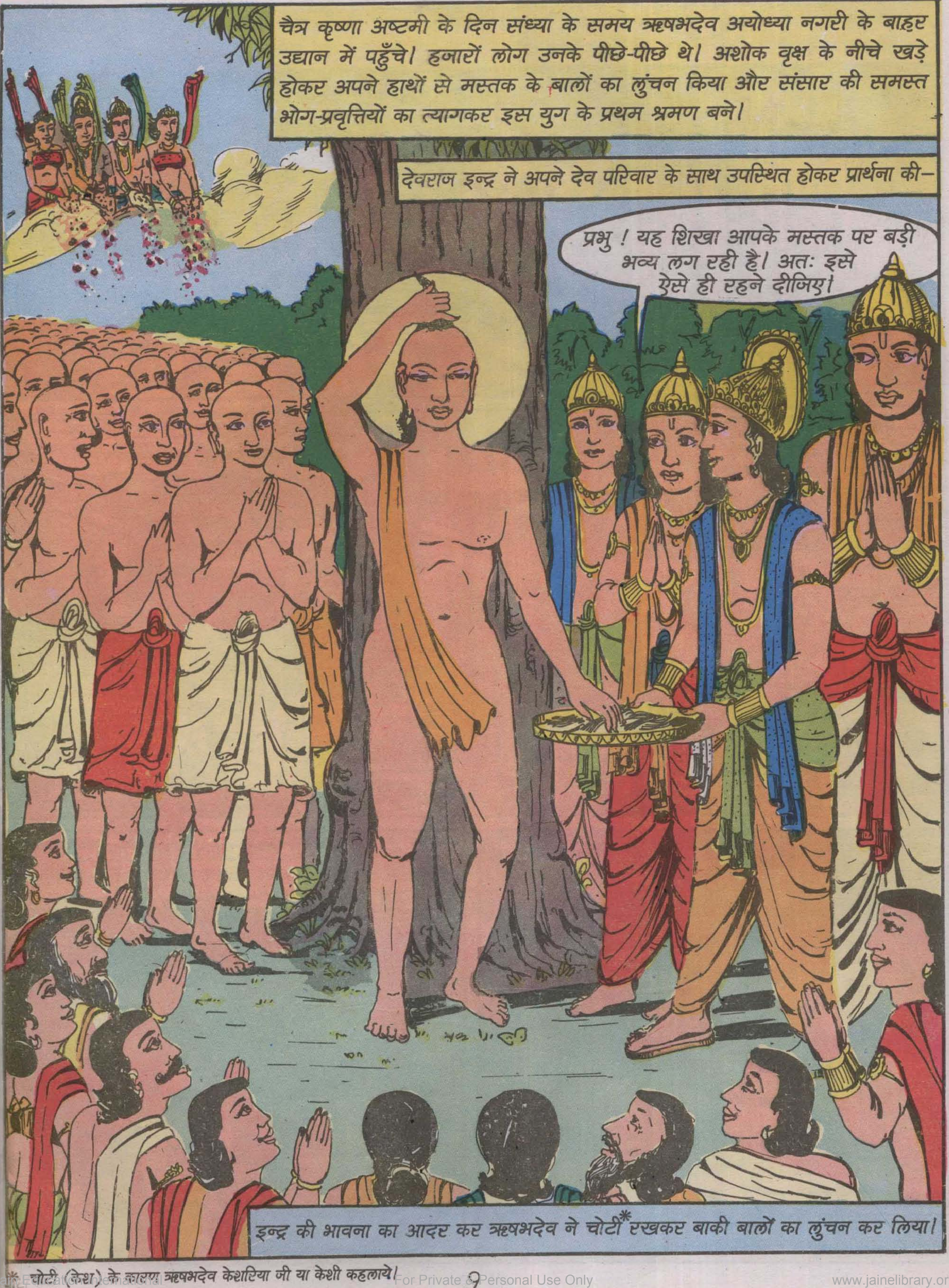

* चोटी (केश) के कारण ऋषभदेव केशरिया जी या केशी कहलाये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

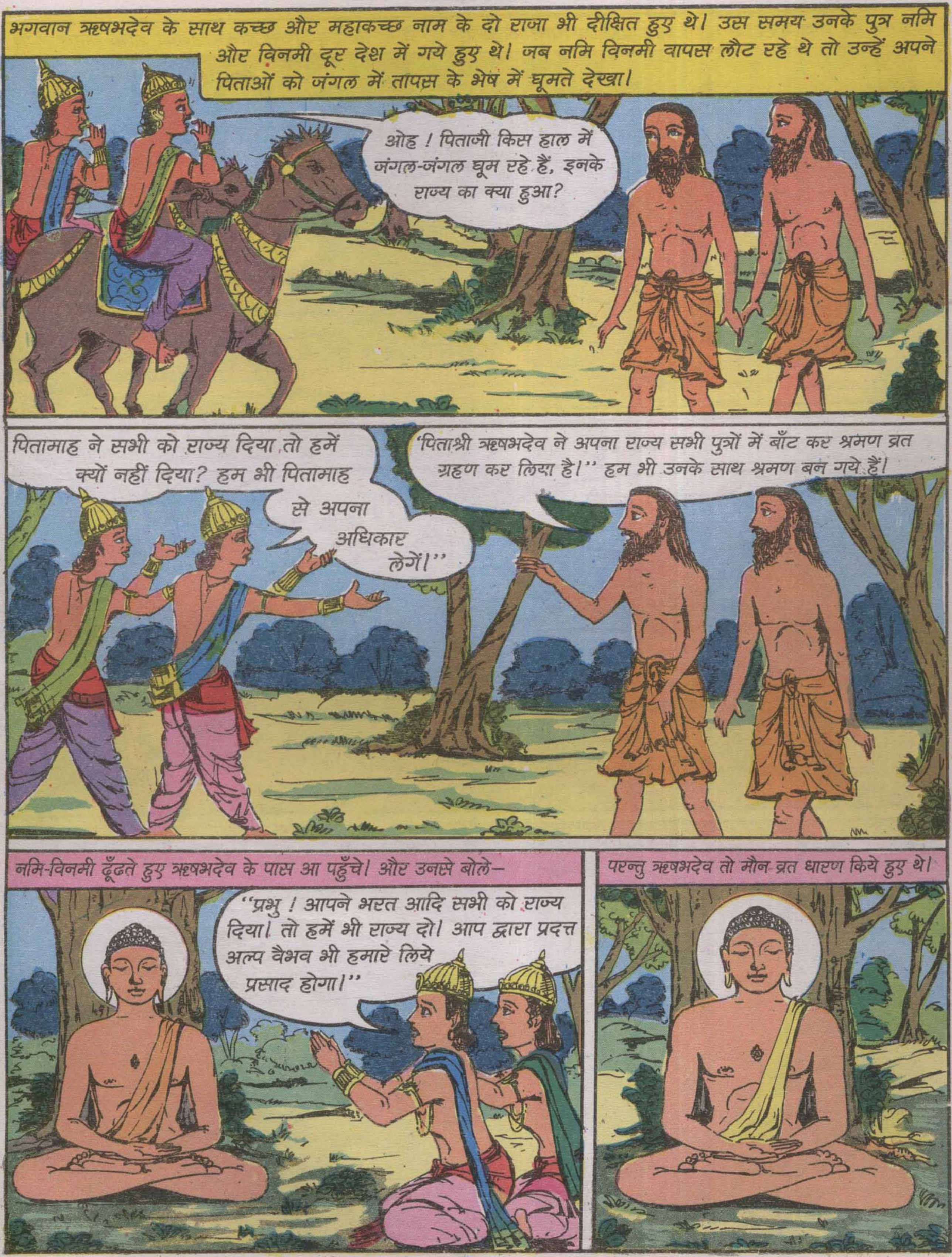

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान को मौन देखकर दोनों भाई वहीं भगवान को प्रसन्न करने के लिये एकचित्त होकर उनकी भक्ति करने लगे।

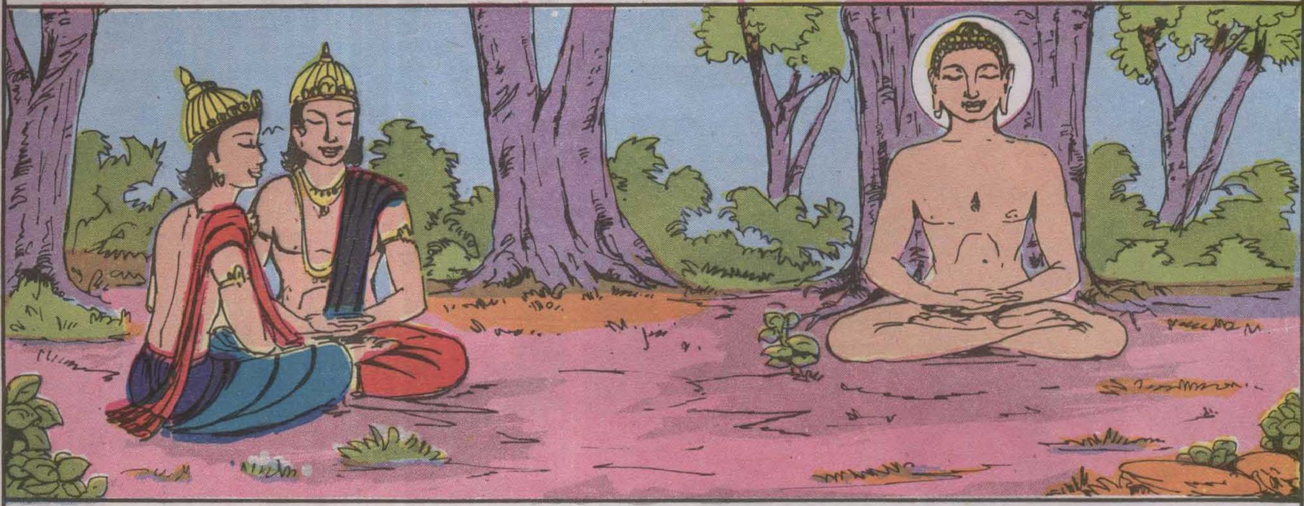

एक दिन नागकुमारों के राजा धरणेन्द्र प्रभु के दर्शन को आये। दोनों कुमारों की अटूट भक्ति देखकर उन्होंने पूछा।

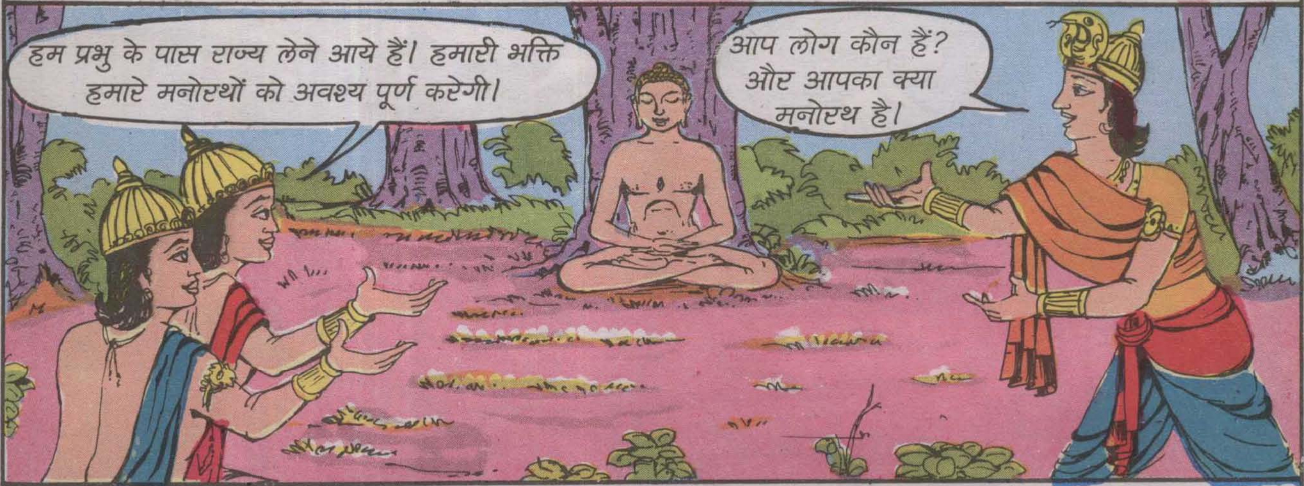

धरणेन्द्र यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। नमि-विनमि को अपने साथ वैताढय पर्वत पर ले गया जहाँ उन्होंने धरणेन्द्र की सहायता से नगर बसाये और सुख पूर्वक राज्य करने लगे।

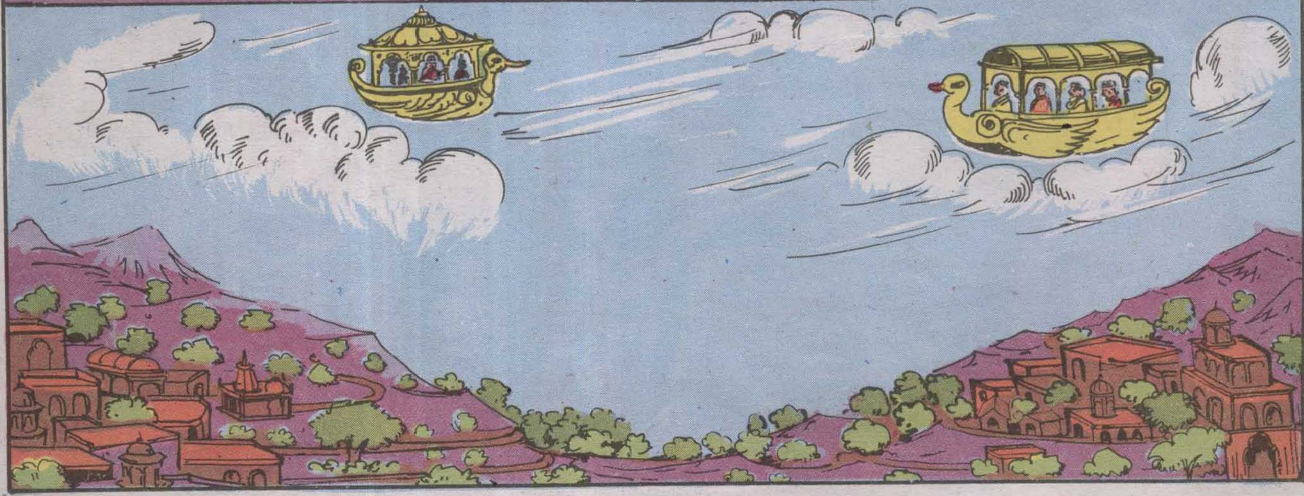

Jain Education International

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रेयांस के हृदय में भक्ति का वेग उमड़ पड़ा, वह महल से नीचे उतरा और प्रभु की वंदना करके इक्षु रस ग्रहण करने की विनती की–

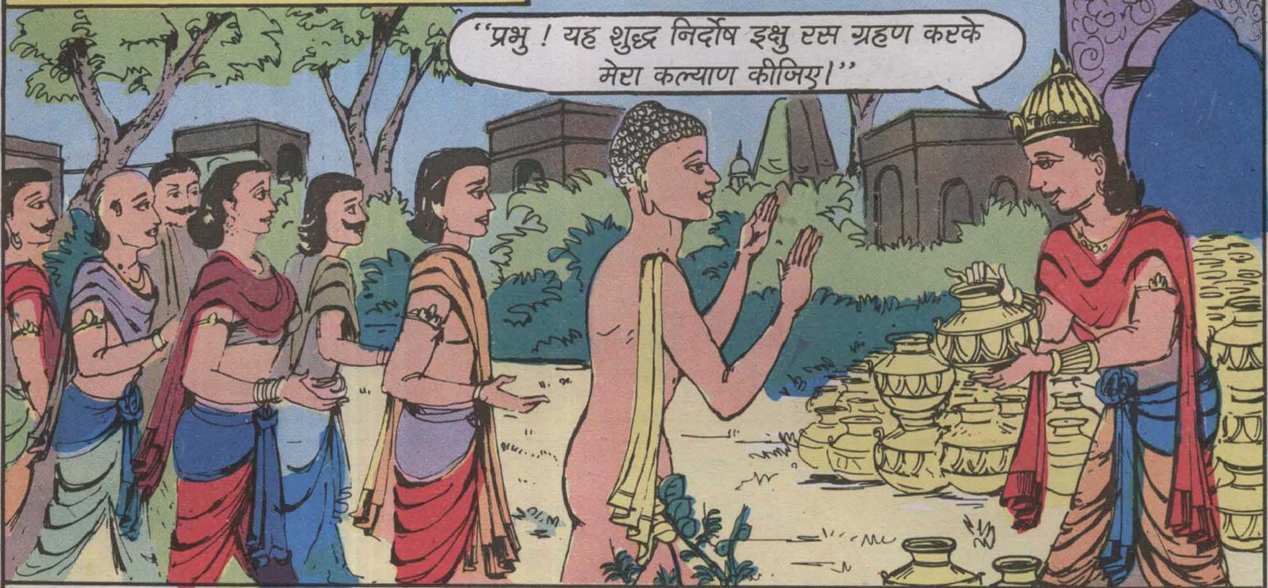

श्रेयांस कुमार की विनती स्वीकारते हुए ऋषभदेव ने इक्षु रस ग्रहण किया। यह पवित्र दिन था, वैशाख शुक्ला तृतीया* का। इस दिन भगवान ऋषभदेव ने इक्षु रस से वर्षी तप का पारणा# किया। इसलिये जैन परम्परा में यह दिन अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

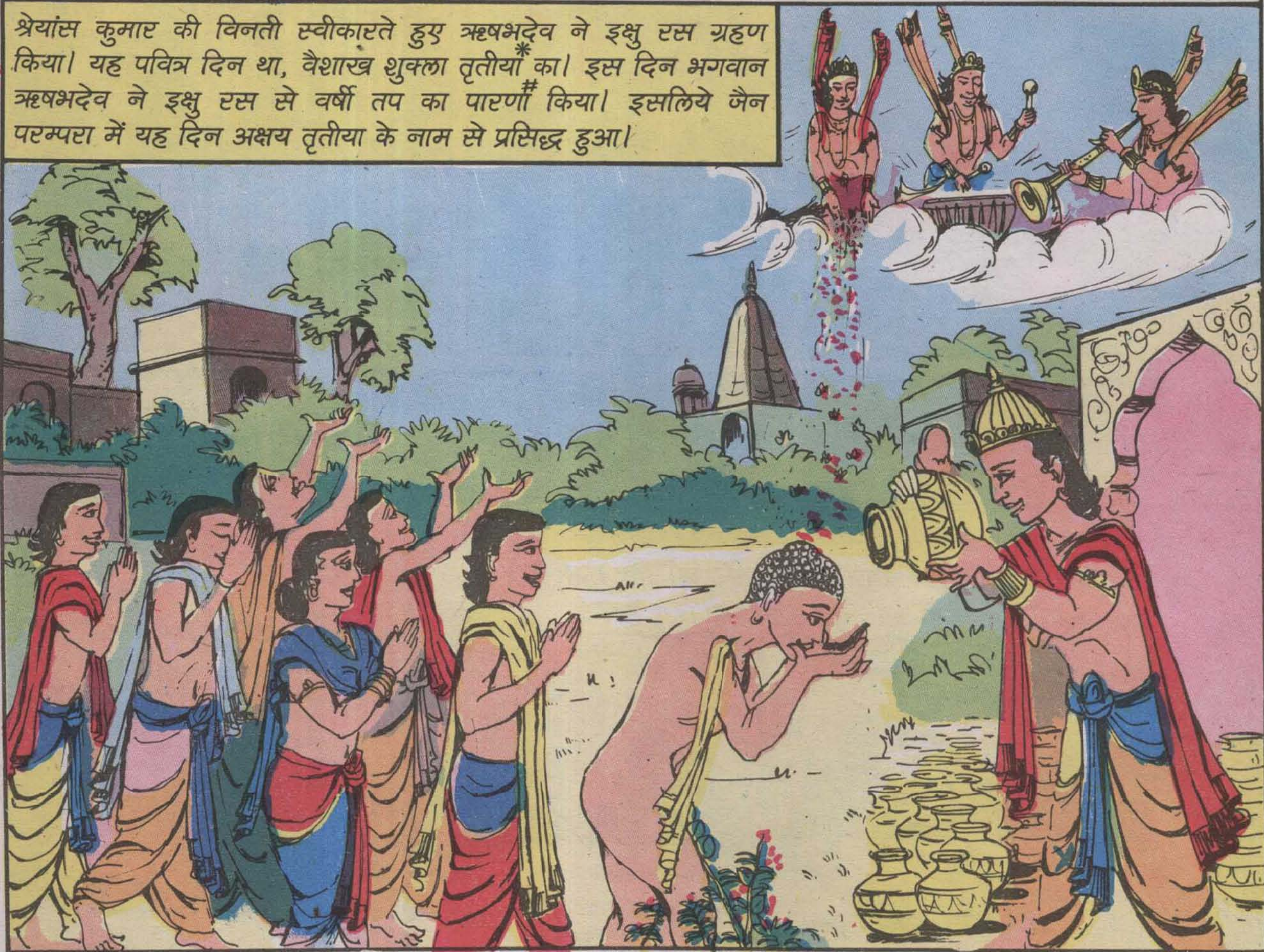

*इसी दिन की स्मृति में आज भी लाखों जैन वर्षी तप (एक वर्ष तक एक दिन भोजन एक दिन उपवास) करते हैं।
#उपवास के बाद आहार ग्रहण करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इधर अयोध्या नगरी में ऋषभदेव की माता मरुदेवा अपने पुत्र के समाचार नहीं मिलने से व्याकुल हो रहीं थी, उन्होंने अपने पौत्र भरत से कहा–

सम्राट भरत ने ऋषभदेव के समाचार लाने चारों ओर दूत भेजे। कई दिन तक कोई समाचार नहीं मिला अचानक एक दिन तीन दूत राज सभा में आये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

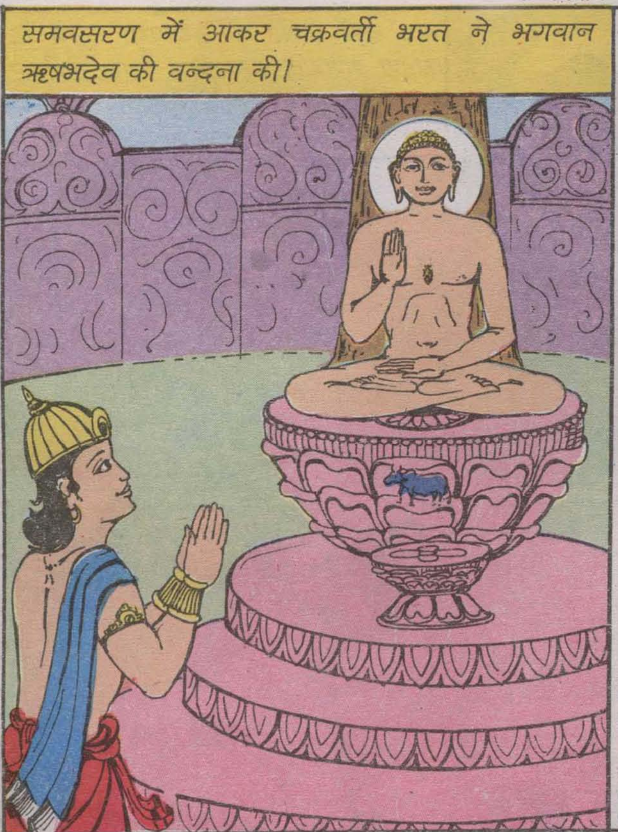

मरुदेवा भाव-विभोर होकर एकटक ऋषभदेव को देखने लगीं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

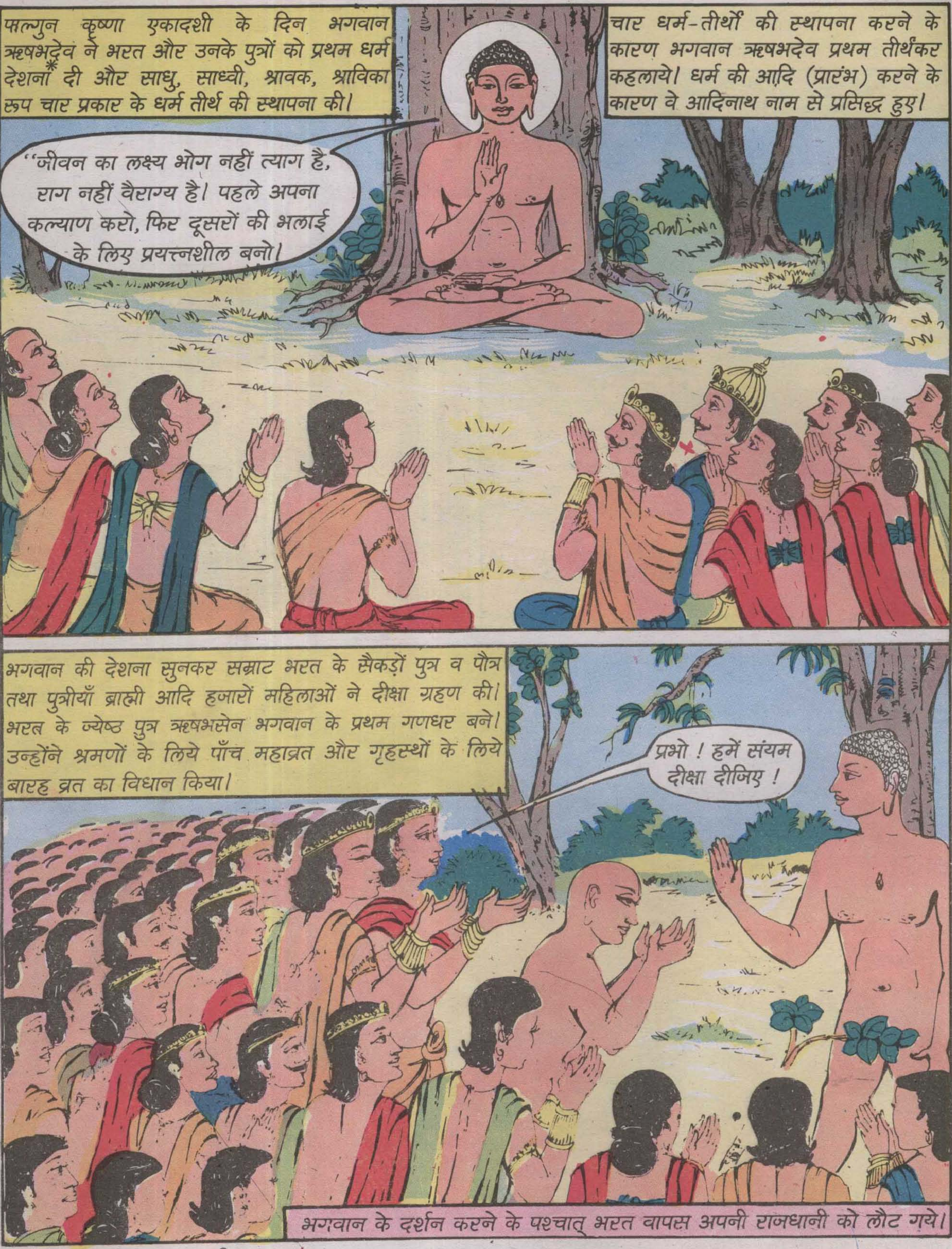

* धर्मदेशना—भगवान का आध्यात्मिक व्याख्यान।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

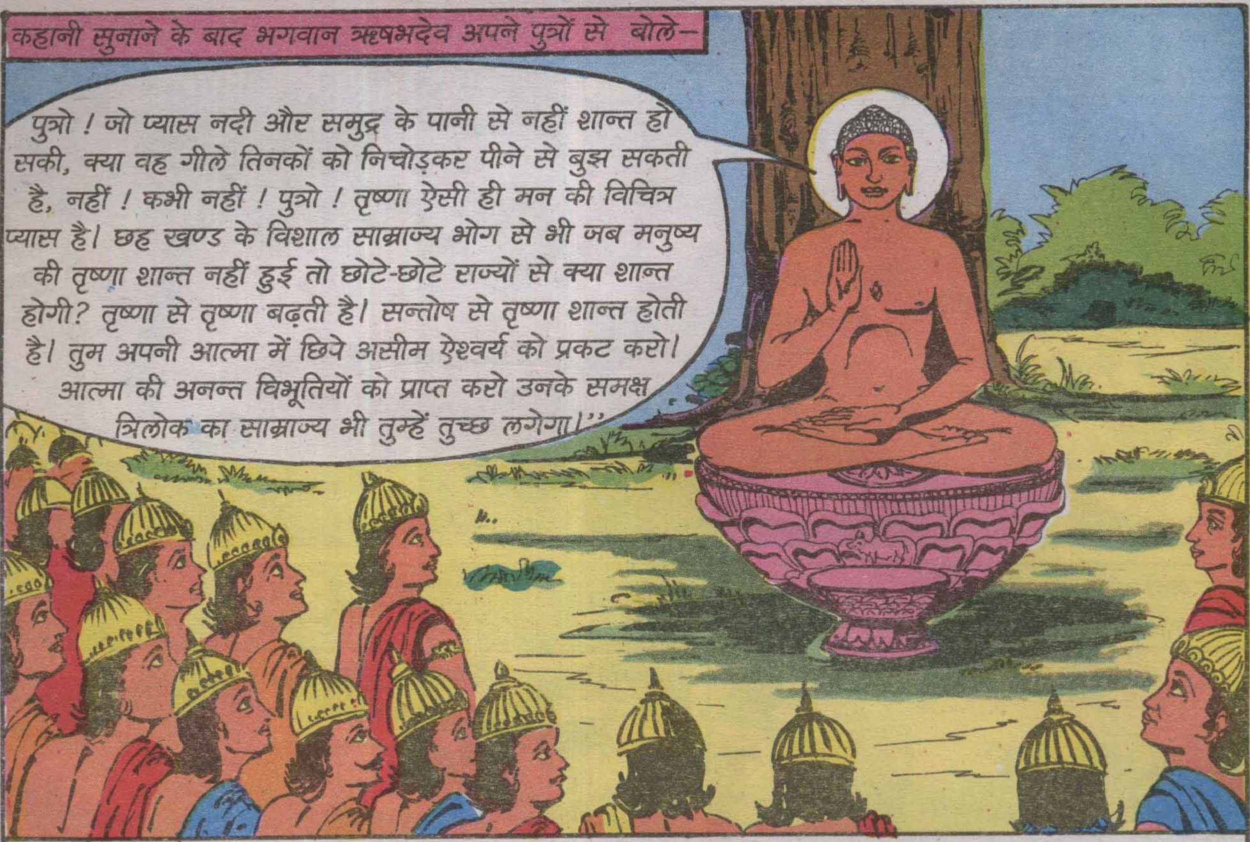

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

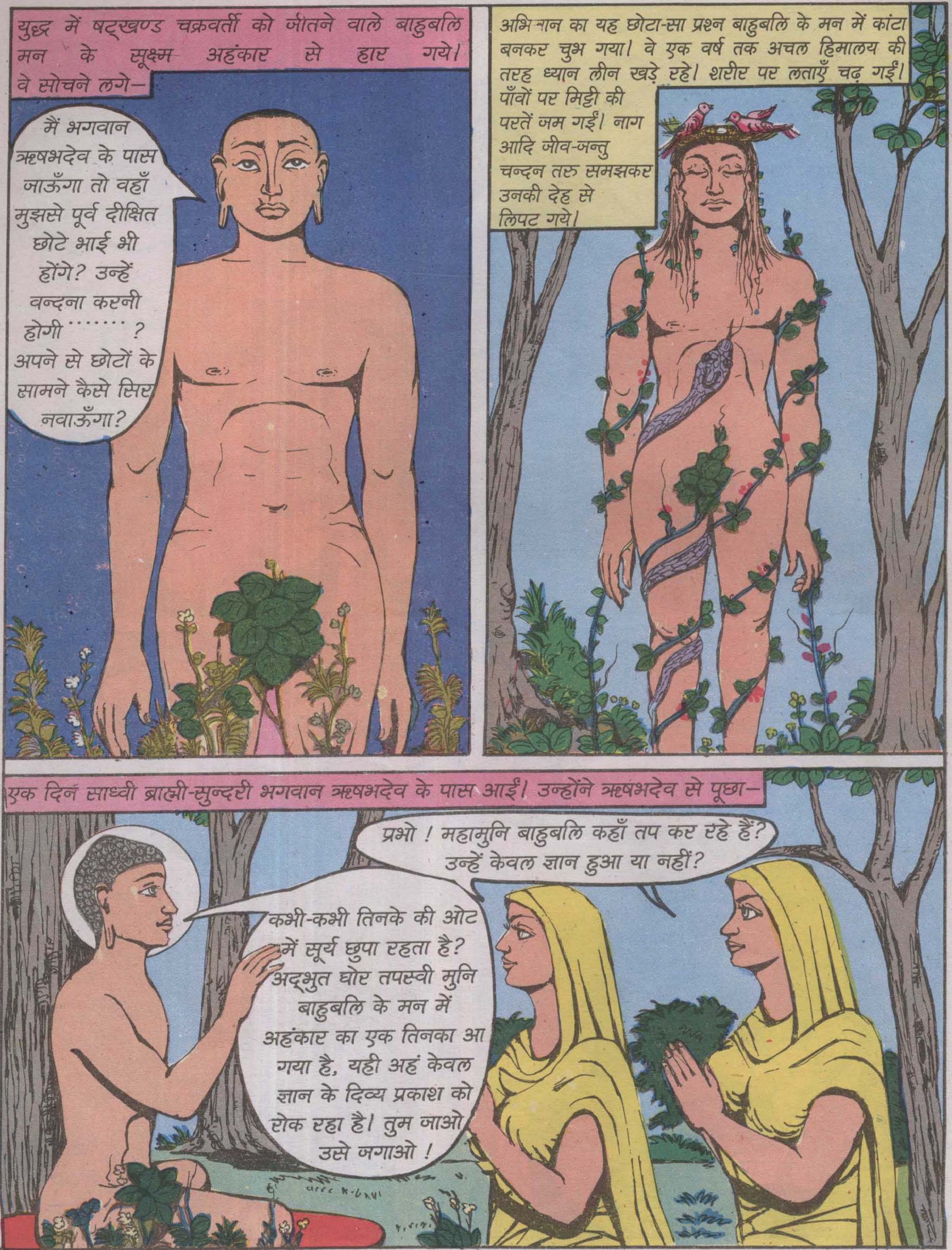
युद्ध में षट्खण्ड चक्रवर्ती को जीतने वाले बाहुबलि मन के सूक्ष्म अहंकार से हार गये। वे सोचने लगे–
मैं भगवान ऋषभदेव के पास जाऊँगा तो वहाँ मुझसे पूर्व दीक्षित छोटे भाई भी होंगे? उन्हें वन्दना करनी होगी ······? अपने से छोटों के सामने कैसे सिर नवाऊँगा?
अभिमान का यह छोटा-सा प्रश्न बाहुबलि के मन में कांटा बनकर चुभ गया। वे एक वर्ष तक अचल हिमालय की तरह ध्यान लीन खड़े रहे। शरीर पर लताएँ चढ़ गईं।
पाँवों पर मिट्टी की परतें जम गईं। नाग आदि जीव-जन्तु चन्दन तरु समझकर उनकी देह से लिपट गये।
एक दिन साध्वी ब्राह्मी-सुन्दरी भगवान ऋषभदेव के पास आईं। उन्होंने ऋषभदेव से पूछा–
प्रभो ! महामुनि बाहुबलि कहाँ तप कर रहे हैं? उन्हें केवल ज्ञान हुआ या नहीं?
कभी-कभी तिनके की ओट में सूर्य छुपा रहता है? अद्‌भुत घोर तपस्वी मुनि बाहुबलि के मन में अहंकार का एक तिनका आ गया है, यही अहं केवल ज्ञान के दिव्य प्रकाश को रोक रहा है। तुम जाओ उसे जगाओ !

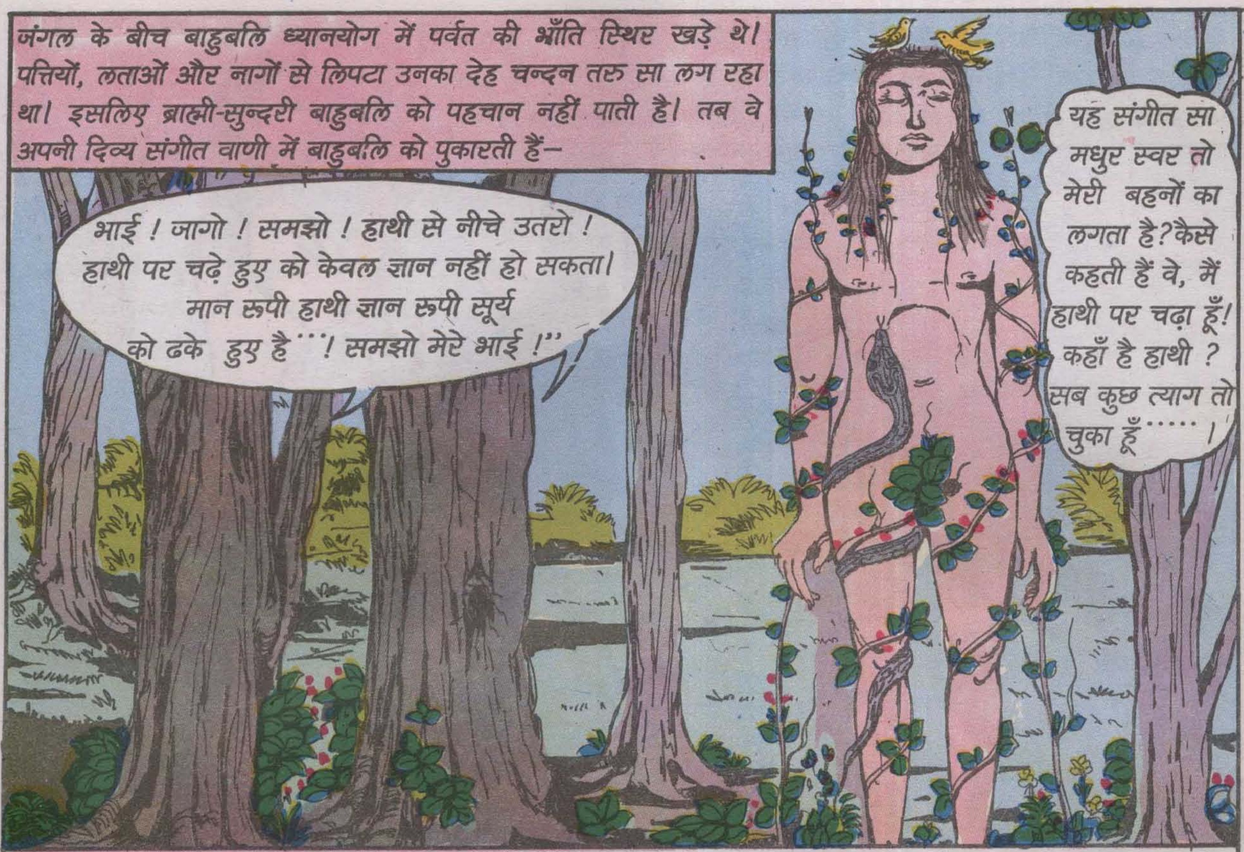

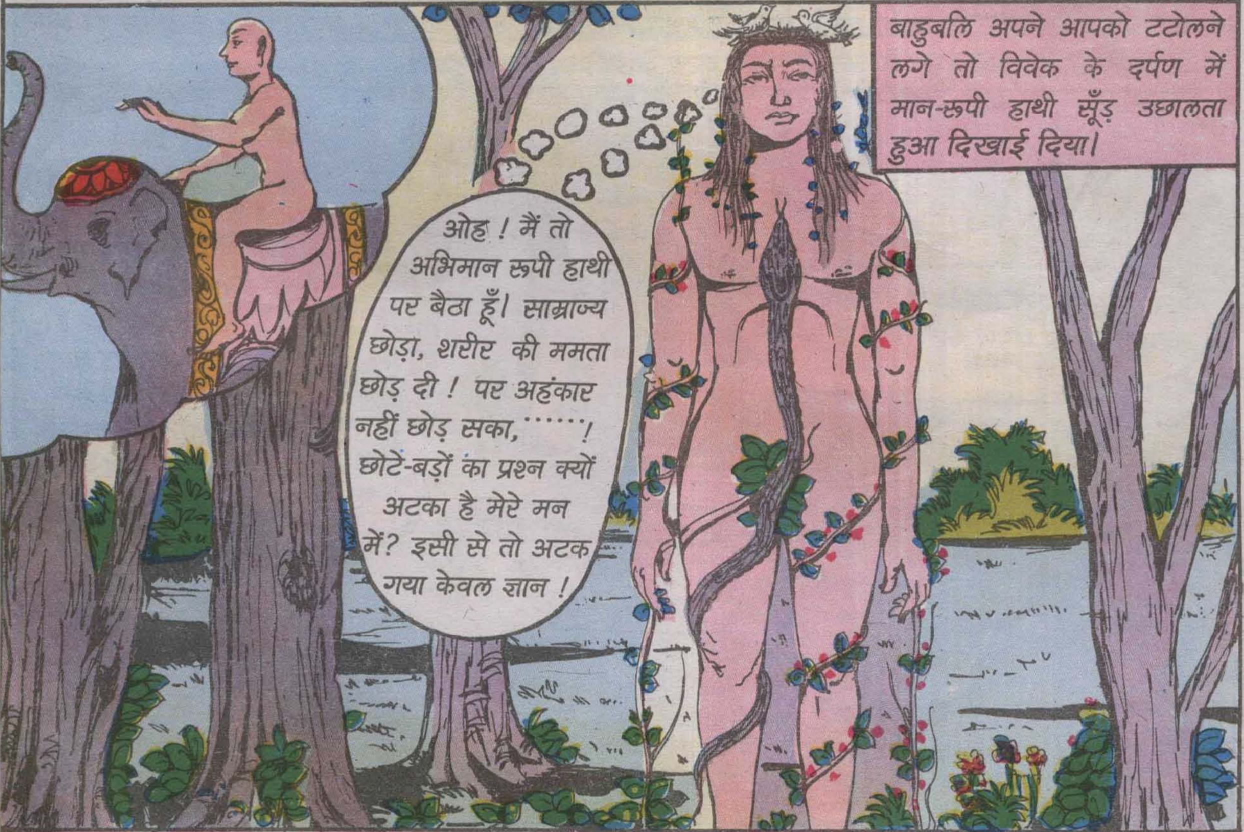

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

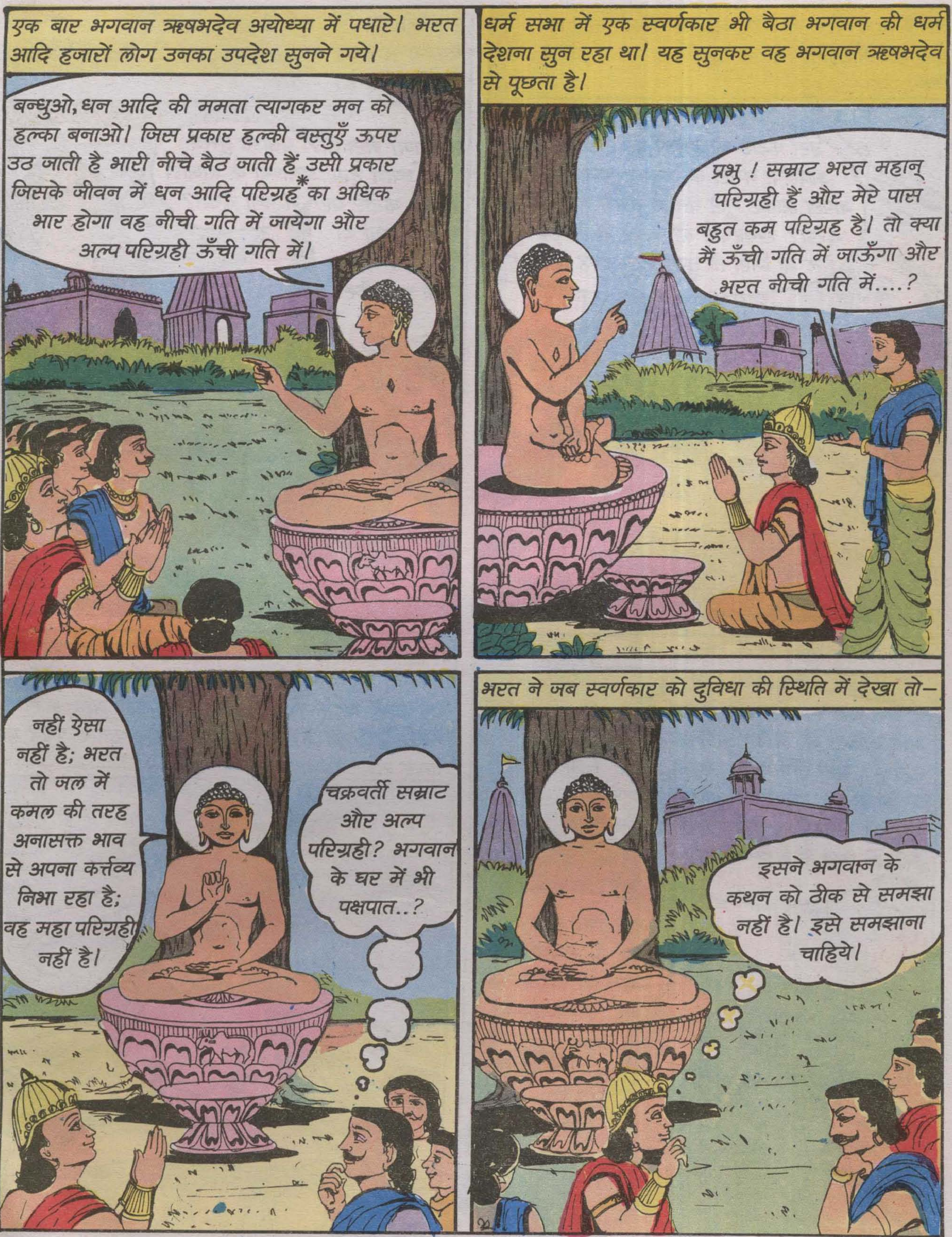

* परिग्रह– धन संपत्ति का लोभ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
MOHAN 0562-266241
For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

वार्षिक सदस्यता फार्म

मान्यवर,

मैं आपके द्वारा प्रकाशित चित्रकथा का सदस्य बनना चाहता हूँ। कृपया मुझे निम्नलिखित वर्षों के लिए सदस्यता प्रदान करें।

(कृपया बॉक्स पर ☑ का निशान लगायें)

☐	तीन वर्ष के लिये	अंक 34 से 66 तक	(33 पुस्तकें)	540/-
☐	पाँच वर्ष के लिये	अंक 12 से 66 तक	(55 पुस्तकें)	900/-
☐	दस वर्ष के लिये	अंक 1 से 108 तक	(108 पुस्तकें)	1,800/-

मैं शुल्क की राशि एम. ओ./ड्राफ्ट द्वारा भेज रहा हूँ। मुझे नियमित चित्रकथा भेजने का कष्ट करें।

नाम (Name)____________________
(in capital letters)

पता (Address)____________________

____

____________________ पिन (Pin)________

M.O./D.D. No.________ Bank________ Amount________

हस्ताक्षर (Sign.)________

नोट—
- यदि आपको अंक 1 से चित्रकथायें मंगानी हो तो कृपया इस लाईन के सामने हस्ताक्षर करें ....
- कृपया चैक के साथ 25/- रुपये अधिक जोड़कर भेजें।
- पिन कोड अवश्य लिखें।

चैक/ड्राफ्ट/एम.ओ. निम्न पते पर भेजें—

SHREE DIWAKAR PRAKASHAN

A-7, AWAGARH HOUSE, OPP. ANJNA CINEMA, M. G. ROAD, AGRA-282 002. PH. : 0562-351165

दिवाकर चित्रकथा की प्रमुख कड़ियाँ

1. क्षमादान
2. भगवान ऋषभदेव
3. णमोकार मन्त्र के चमत्कार
4. चिन्तामणि पार्श्वनाथ
5. भगवान महावीर की बोध कथायें
6. बुद्धि निधान अभय कुमार
7. शान्ति अवतार शान्तिनाथ
8. किस्मत का धनी धन्ना
9-10 करुणा निधान भ. महावीर (भाग-1, 2)
11. राजकुमारी चन्दनबाला
12. सती मदनरेखा
13. सिद्ध चक्र का चमत्कार
14. मेघकुमार की आत्मकथा
15. युवायोगी जम्बूकुमार
16. राजकुमार श्रेणिक
17. भगवान मल्लीनाथ
18. महासती अंजना सुन्दरी
19. करनी का फल (ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती)
20. भगवान नेमिनाथ
21. भाग्य का खेल
22. करकण्डू जाग गया (प्रत्येक बुद्ध)
23. जगत् गुरु हीरविजय सूरी
24. वचन का तीर
25. अजात शत्रु कूणिक
26. पिंजरे का पंछी
27. धरती पर स्वर्ग
28. नन्द मणिकार (अन्त मति सो गति)
29. कर भला हो भला
30. तृष्णा का जाल
31. पाँच रत्न
32. अमृत पुरुष गौतम
33. आर्य सुधर्मा
34. पुणिया श्रावक
35. छोटी-सी बात
36. भरत चक्रवर्ती
37. सद्दाल पुत्र
38. रूप का गर्व
39. उदयन और वासवदत्ता
40. कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य
41. कुमारपाल और हेमचन्द्राचार्य
42. दादा गुरुदेव जिनकुशल सूरी
43. श्रीमद् राजचन्द्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक बात आपसे भी.........

सम्माननीय बन्धु,

सादर जय जिनेन्द्र !

जैन साहित्य में संसार की श्रेष्ठ कहानियों का अक्षय भण्डार भरा है। नीति, उपदेश, वैराग्य, बुद्धिचातुर्य, वीरता, साहस, मैत्री, सरलता, क्षमाशीलता आदि विषयों पर लिखी गई हजारों सुन्दर, शिक्षाप्रद, रोचक कहानियों में से चुन-चुनकर सरल भाषा-शैली में भावपूर्ण रंगीन चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने का एक छोटा-सा प्रयास हमने गत चार वर्षों से प्रारम्भ किया है।

अब यह चित्रकथा अपने पाँचवे वर्ष में पदापर्ण करने जा रही है।

इन चित्रकथाओं के माध्यम से आपका मनोरंजन तो होगा ही, साथ ही जैन इतिहास संस्कृति, धर्म, दर्शन और जैन जीवन मूल्यों से भी आपका सीधा सम्पर्क होगा।

हमें विश्वास है कि इस तरह की चित्रकथायें आप निरन्तर प्राप्त करना चाहेंगे। अतः आप इस पत्र के साथ छपे सदस्यता पत्र पर अपना पूरा नाम, पता साफ-साफ लिखकर भेज दें।

आप इसके तीन वर्षीय (33 पुस्तकें), पाँच वर्षीय (55 पुस्तकें) व दस वर्षीय (108 पुस्तकें) सदस्य बन सकते हैं।

आप पीछे छपा फार्म भरकर भेज दें। फार्म व ड्राफ्ट/एम. ओ. प्राप्त होते ही हम आपको रजिस्ट्री से अब तक छपे अंक तुरन्त भेज देंगे तथा शेष अंक (आपकी सदस्यता के अनुसार) प्रत्येक माह डाक द्वारा आपको भेजते रहेंगे।

धन्यवाद !

आपका

नोट—वार्षिक सदस्यता फार्म पीछे है।

श्रीचन्द सुराना 'सरस'

सम्पादक

SHREE DIWAKAR PRAKASHAN

A-7, AWAGARH HOUSE, OPP. ANJNA CINEMA, M. G. ROAD, AGRA-282 002. PH. : 0562-351165

हमारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सचित्र भावपूर्ण प्रकाशन

पुस्तक का नाम	मूल्य	पुस्तक का नाम	मूल्य	पुस्तक का नाम	मूल्य
सचित्र भक्तामर स्तोत्र	325.00	सचित्र ज्ञातासूत्र (भाग-1, 2)	1,000.00	सचित्र दशवैकालिक सूत्र	500.00
सचित्र णमोकार महामंत्र	125.00	सचित्र कल्पसूत्र	500.00	भक्तामर स्तोत्र (जेबी गुटका)	18.00
सचित्र तीर्थंकर चरित्र	200.00	सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र	500.00	सचित्र मंगल माला	20.00
सचित्र आचारांग सूत्र	500.00	सचित्र अन्तकृद्दशा सूत्र	500.00	सचित्र भावना आनुपूर्वी	21.00

चित्रपट एवं यंत्र चित्र

सर्वसिद्धिदायक णमोकार मंत्र चित्र	25.00	श्री गौतम शलाका यंत्र चित्र	15.00
भक्तामर स्तोत्र यंत्र चित्र	25.00	श्री सर्वतोभद्र तिजय पहुत्त यंत्र चित्र	10.00
श्री वर्द्धमान शलाका यंत्र चित्र	15.00	श्री घंटाकरण यंत्र चित्र	25.00
श्री सिद्धिचक्र यंत्र चित्र	20.00	श्री ऋषिमण्डल यंत्र चित्र	20.00

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन साहित्य के इतिहास में एक नया शुभारम्भ
सचित्र आगम हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के साथ

जैन संस्कृति का मूल आधार है आगम। आगमों के कठिन विषय को सुरम्य रंगीन चित्रों के द्वारा मनोरंजक और सुबोध शैली में मूल प्राकृत पाठ, सरल हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रस्तुत करने का ऐतिहासिक प्रयत्न।

अब तक प्रकाशित आगम

सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र — मूल्य 500.00
(भगवान महावीर की अन्तिम वाणी अत्यन्त शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्द्धक जीवन सन्देश।)

सचित्र अन्तकृद्दशासूत्र — मूल्य 500.00
अष्टम अंग। 90 मोक्षगामी आत्माओं का तप-साधना पूर्ण रोचक जीवन वृत्तान्त।

सचित्र ज्ञाता धर्मकथांगसूत्र (भाग 1, 2) — प्रत्येक का मूल्य 500.00
भगवान महावीर द्वारा कथित बोधप्रद दृष्टान्त एवं रूपकों आदि को सुरम्य चित्रों द्वारा सरल सुबोध शैली में प्रस्तुत किया गया है।

सचित्र कल्पसूत्र — मूल्य 500.00
पर्युषण पर्व में पठनीय 24 तीर्थंकरों का जीवन-चरित्र व स्थविरावली आदि का वर्णन। रंगीन चित्रमय।

सचित्र दशवैकालिक सूत्र — मूल्य 500.00
जैन श्रमण की सरल आचार संहिता : जीवन में पद-पद पर काम आने वाले विवेकयुक्त संयत व्यवहार, भोजन, भाषा, विनय आदि की मार्गदर्शक सूचनाएँ। आचार विधि को रंगीन चित्रों के माध्यम से आकर्षक और सुबोध बनाया गया है।

सचित्र नन्दी सूत्र — मूल्य 500.00
ज्ञान के विविध स्वरूपों का अनेक युक्ति एवं दृष्टान्तों के साथ रोचक वर्णन। चित्रों द्वारा ज्ञान के सूक्ष्म स्वरूपों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सचित्र आचारांग सूत्र (भाग 1, 2) — प्रत्येक का मूल्य 500.00
जैन धर्म के आचार विचार का आधारभूत शास्त्र। जिसमें अहिंसा, संयम, तप, अप्रमाद आदि विषयों पर बहुत ही सुन्दर विवेचन है। भगवान महावीर की साधना का भी रोचक इतिहास इसमें है।

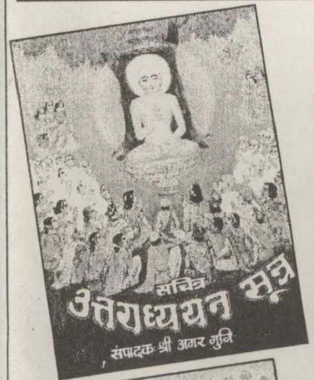

प्रकाशित 9 सचित्र आगमों के सैट का मूल्य 4,500/-

प्राप्ति स्थान :
श्री दिवाकर प्रकाशन
ए-7, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड,
आगरा-282002. फोन : (0562) 351165

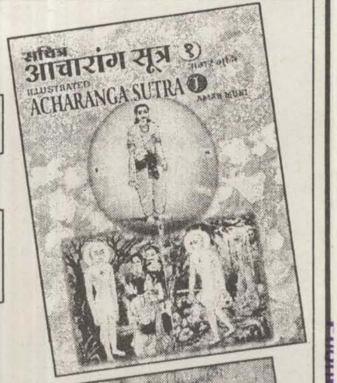

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैनधर्म के प्रसिद्ध विषयों पर आधारित रंगीन सचित्र कथाएं : दिवाकर चित्रकथा

जैनधर्म, संस्कृति, इतिहास और आचार-विचार से सीधा सम्पर्क बनाने का एक सरलतम, सहज माध्यम। मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक, संस्कार-शोधक, रोचक सचित्र कहानियाँ।

प्रसिद्ध कड़ियाँ

1. क्षमादान
2. भगवान् ऋषभदेव
3. णमोकार मन्त्र के चमत्कार
4. चिन्तामणि पार्श्वनाथ
5. भगवान महावीर की बोध कथायें
6. बुद्धिनिधान अभयकुमार
7. शान्ति अवतार शान्तिनाथ
8. किस्मत का धनी धन्ना
9-10. करुणानिधान भ. महावीर
11. राजकुमारी चन्दनबाला
12. सती मदनरेखा
13. सिद्धचक्र का चमत्कार
14. मेघकुमार की आत्मकथा
15. युवायोगी जम्बूकुमार
16. राजकुमार श्रेणिक
17. भगवान मल्लीनाथ
18. महासती अंजनासुन्दरी
19. करनी का फल (ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती)
20. भगवान नेमिनाथ
21. भाग्य का खेल
22. करकण्डू जाग गया
23. जगत् गुरु हीरविजय सूरि
24. वचन का तीर
25. अजातशत्रु कूणिक
26. पिंजरे का पंछी
27. धरती पर स्वर्ग
28. नन्द मणिकार
29. कर भला हो भला
30. तृष्णा का फल
31. पाँच रत्न

55 पुस्तकों के सैट का मूल्य 900.00 रुपया। 33 पुस्तकों के सैट का मूल्य 540.00 रुपया।

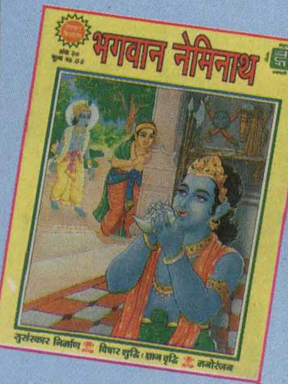

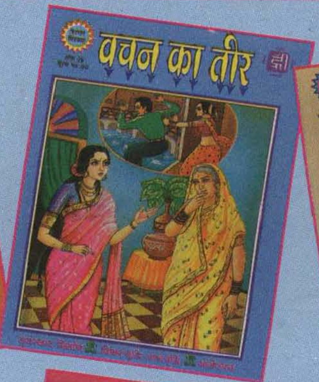

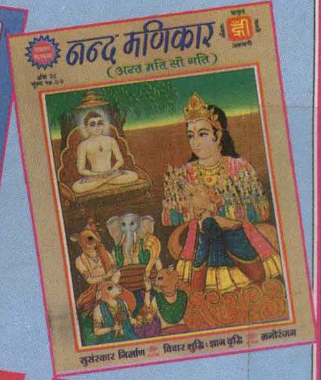

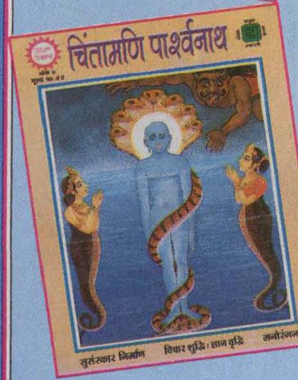

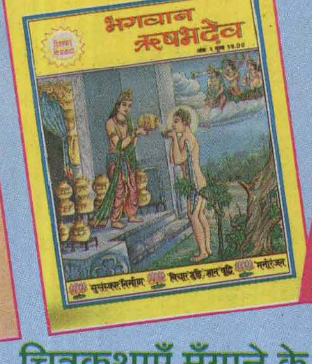

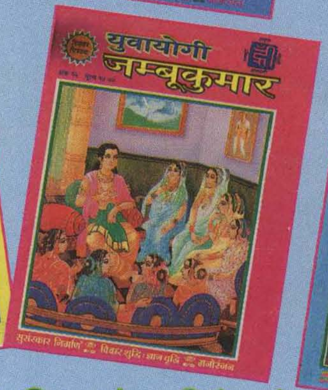

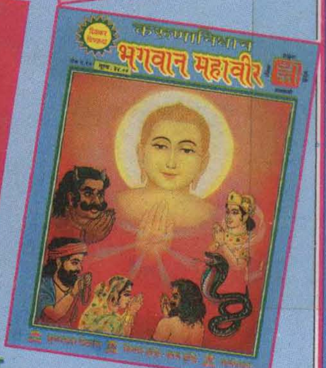

चित्रकथाएँ मँगाने के लिए अंदर दिये गये सदस्यता फॉर्म को भरकर भेजें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org